धर्म के आर-पार औरत

(भाग 1- लेख संग्रह)

नीलम कुलश्रेष्ठ

धर्म के आर-पार औरत

(लेख – संग्रह)

नीलम कुलश्रेष्ठ

अस्मिता को

भूमिका

मेरे द्वारा संपादित 'धर्म की बेड़ियाँ खोल रही है औरत' को पाठकों व बुद्धिजीवियों ने इतना पसंद किया है कि-मुझे लगा 'अस्मिता' महिला बहुभाषी साहित्यिक मंच, वडोदरा के दो दशक पूरे होने के उपलक्ष में पाठकों को एक और उपहार दूँ, एक और पुस्तक संपादित करूँ ' धर्म के आर-पार औरत'। 'अस्मिता' की गोष्ठियों के कारण मेरे मन में इन पुस्तकों के संपादन के विचार का जन्म हुआ। इस मंच की नींव डॉ रचना निगम व मैंने सन् 1990 में डाली थी। इसकी प्रथम गोष्ठी में सिर्फ हम छह महिलाएँ थीं जिनकी संख्या पंद्रह-बीस से बढ़कर कभी अधिक न हो सकी। अधिकतर गोष्ठियाँ अरविंद आश्रम के लॉन पर बैठकर, किसी सदस्या के घर बैठकर या हाई-टी के समय रेस्तराँ में होती रहीं। अब ये गोष्ठियाँ गायकवाड़ राजकीय परिवार द्वारा बनवाए 'अभिव्यक्ति' स्थल पर होती हैं जहाँ इस संस्कार नगरी के कलाकार नि: शुल्क मिल सकते हैं, आर्ट गैलरी मैं चित्रकला प्रदर्शनी लगा सकते हैं।

इस मध्यम श्रेणी के शहर की मुट्ठी-भर महिलाओं के बीच अध्यक्ष संस्कृत विद्वान डॉ. उमा देशपांडे ने बताया कि वाल्मीकीय रामायण में स्पष्ट लिखा है कि राम ने सीता की अग्निपरीक्षा के बाद उनसे कह दिया था कि वे चाहें तो लक्षण या विभीषण या अगंद के साथ जा सकती हैं। इसी तरह सचिव डॉ. रचना निगम भी राम को मर्यादा पुरुष न मानकर उनकी पूजा नहीं करती थीं। 'इंद्राणी' नाम से अपनी कविता में गांधारी से प्रश्न किया कि जब तुम्हारे पति अंधे थे तो तुमने आँखों पर पट्टी क्यों बाँधी ? इसीलिए कौरव आततायी हो गए। डॉ. रानु मुखर्जी के कविता में तेवर थे, 'मैं सीता बन सकती हूँ पर नहीं बनूँगी...रावण को पहचानूँगी।' मुझे लगा ये सब तो करोड़ों संवेदनशील भारतीय दिलों की आवाजें हैं जिनका आज की शिक्षित स्त्री विश्लेषण कर उन्हें शब्द दे रही है।

नरेंद्र जैन के शब्दों में कहूँ तो-

सदियों पहले तराशी गई
इन पत्थरों पर
जातक कथाएँ
औजारों की आवाज़
यहाँ तक सुनाई देती है।

बस आग्रह है 'जातक' शब्द के स्थान पर 'औरत की' शब्द पढ़िए लेकिन क्या शिक्षा ग्रहण करने से स्त्री के लिए ये दुनिया बदल गई है ?

निदा फ़ाज़ली के शब्द हैं-

छोटा लगता था अफ़साना
मैंने तेरी बात बढ़ा दी
सोचने बैठे जब भी उसको
अपनी ही तस्वीर बना दी।

हम नास्तिक नहीं हैं। मैं व मेरा परिवार पूजा करता है लेकिन मेरा दृढ़ विश्वास है कि हमारे भारतीय समाज में सदियों से रामायण व महाभारत ग्रंथ पढ़े जा रहे हैं इसलिए पुरुष के अवचेतन मन में स्त्री-प्रताड़ना, उसके आँसू एक सहज प्रक्रिया हैं। इन सब बातों का मनन करके 'अस्मिता' ने एक थीम कवयित्री सम्मेलन आयोजित किया। 'प्राचीन स्त्री चरित्र-आधुनिक स्त्री के दृष्टिकोण से'। महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के रसायन विभाग कॉइ रीडर डॉ. नलिनी पुरोहित का कवयित्री सम्मेलन का संचालन हर वार्षिक कार्यक्रम की उपलब्धि है लेकिन मैंने इस विशेष कार्यक्रम के आरंभ में 'कथादेश' में प्रकाशित संजय कुंदन की कविता पढ़ी थी-

शायद पूर्वज लौटना चाहते हों

हमारे बीच

छूट रहा हो कोई शब्द

सिर्फ़ उसी शब्द की कमी से

धँसी जा रही हो धरती

घिग्घी बँधी जा रही हो सभ्यता की।

ये 'स्त्री' संदर्भ में छूटा शब्द 'संवेदना' है।

इस कार्यक्रम की रिपोर्ट पढ़कर डॉ. नमिता सिंह प्रभावित हुईं। तब मेरा निश्चय दृढ़ हुआ कि मैं एक पुस्तक संपादित करूँ। देश की जानी-मानी रचनाकारों ने जिस तरह सहयोग दिया, मैं स्वयं हतप्रभ रह गई। 'धर्म की बेड़ियाँ खोल रही है औरत' को प्रकाशित करने का दुस्साहस 'शिल्पायन' के ललित शर्मा ने किया, मैं व 'अस्मिता' हमेशा कृतज्ञ रहेंगी कि उन्हीं के सहयोग के कारण हम एक 'मॉडल वर्क' देश को दे सके।

'अस्मिता' गुजरात का प्रथम महिला साहित्यिक मंच है। बाद में दो-चार मंचों की यहाँ भी स्थापना हुई। अहमदाबाद के गुजराती भाषी कलम लेखिका मंच की स्थापना सन् 2000 में हुई। इसकी एक गोष्ठी में जाकर पता लगा हिंदी में लिखना एक सौभाग्य है क्योंकि इतनी ढेर-सी हिंदी पत्रिकाएँ हैं कि कहीं न कहीं आपकी रचना को स्थान मिलता ही है लेकिन प्रांतीय भाषाओं में अभिव्यक्ति की कुंठा बेहद विकट है। उस पर समाचार-पत्रों में समाप्त किए गए साहित्यिक कॉलम।

'धर्म के आर-पार औरत' में सुधा अरोड़ा 'कथादेश' पत्रिका के 'औरत की दुनिया' स्तंभ जैसे तीखे तेवरों के साथ उपस्थित हैं। इस पुस्तक में संतोष श्रीवास्तव व निर्मला पुतुल चतुर चितेरे कृष्ण को आड़े हाथों ले रही हैं।

वैदिक काल में स्त्री-पुरुष समान थे। यह एक थियरी है, सच कुछ और है। वेदों में उस समय सैकड़ों पुरुष ऋषियों के नाम पढ़े जा सकते हैं जबकि स्त्री ऋषियों की संख्या आठ से दस के बीच ही है। सबसे